बहुभाषी सन्दर्भ में सीखना

बिनय पटनायक

पृष्ठभूमि

झारखण्ड एक बहुभाषी राज्य है, जहाँ बत्तीस से अधिक जनजातीय समुदाय हैं जो लगभग उन्नीस जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं। इन प्रमुख सम्पर्क (लिंक) भाषाओं में से कुछ, राज्य में विभिन्न जनजातीय भाषाओं के बीच सेतु का काम करती हैं। राज्य में नौ *विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह* (पीवीटीजी) हैं और उनकी कुछ भाषाएँ बहुत संकट में हैं।

इन सभी समुदायों के बच्चों को अपने शुरुआती स्कूली वर्षों में अधिगम सम्बन्धी बहुत असुविधाएँ होती हैं, क्योंकि उनकी घरेलू भाषाएँ हिन्दी से बहुत भिन्न होती हैं और हिन्दी स्कूल की भाषा है। राज्य के प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश करने वाले औसतन एक तिहाई बच्चे प्रारम्भिक कक्षाओं में ही स्कूल छोड़ देते हैं, जो देश में बच्चों के ड्रॉप-आउट की उच्चतम दर है। जो बच्चे स्कूल जाना जारी रखते हैं, वे इतने निराश हो जाते हैं कि उन्हें भी आठवीं कक्षा तक आते-आते अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए काफ़ी संघर्ष करना पड़ता है। क्योंकि वे अपनी पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु या अपने उन शिक्षकों की बात नहीं समझ पाते जो उन्हें हिन्दी में पढ़ाते हैं और परीक्षा भी हिन्दी भाषा में ही लेते हैं। इस प्रकार बच्चों को घर और समुदाय से अधिगम के जो अनुभव प्राप्त होते हैं, उन्हें पूरी तरह से नकार दिया जाता है। इसलिए एनसीईआरटी, एएसईआर आदि के राष्ट्रीय अधिगम उपलब्धि सर्वेक्षणों में राज्य के विद्यार्थियों के अधिगम परिणाम राज्यों की सूची में सबसे नीचे दिखाई देते हैं। ख़राब प्रदर्शन के अन्य कारण हैं- राजनीतिक अस्थिरता और स्थानीय पाठ्यपुस्तकों की अनुपलब्धता।

दिलचस्प बात यह है कि राज्य ने हिन्दी और अँग्रेज़ी के बाद बारह जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाओं को अपनी आधिकारिक भाषाओं के रूप में अधिसूचित किया है। किन्तु 40,000 प्राथमिक विद्यालयों में से किसी के पास भी कक्षा में बच्चों की मातृभाषाओं का उपयोग करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। लगता था कि प्रशासन को उच्चतम ड्रॉप-आउट दरों, अधिगम के न्यूनतम परिणामों और शिक्षकों व विद्यार्थियों दोनों की चिन्ताजनक रूप से कम उपस्थिति जैसे मुद्दों को लेकर कोई परेशानी नहीं थी। राज्य के अधिकांश बच्चों से जुड़े इन गम्भीर मुद्दों पर कभी कोई चर्चा नहीं हुई।

शुरुआती वर्षों में बच्चों के सीखने के अनुभव और स्कूल छोड़ने के कारणों को समझने के लिए एक टीम का गठन किया गया था, जिसका नाम था मातृभाषा-आधारित सक्रिय भाषा अधिगम (एम-टीएएलएल)।

एम-टीएएलएल (M-TALL) और उसकी पहल

स्कूलों, समुदायों और उनके बच्चों की प्रतिक्रिया के आधार पर राज्य के रंग-कोडित भाषा-मानचित्रों का निर्माण किया गया जिनमें भाषाओं की प्राथमिकता का संकेत दिया गया था। इस अभ्यास से जो बात उभर कर आई, वह यह थी कि 96% उत्तरदाताओं द्वारा क्षेत्रीय बोलियों का उपयोग किया जा रहा था और केवल 4% लोग अपनी मातृभाषा के रूप में हिन्दी में बातचीत करते थे। अधिकांश बच्चे माता-पिता के साथ बातचीत करने के लिए या खेलते समय या दिन-प्रतिदिन की बातचीत में अपनी क्षेत्रीय बोलियों और भाषाओं का प्रयोग करते थे। इसलिए यह बात स्पष्ट हो गई कि बच्चों के सामने अधिगम की जो चुनौतियाँ आती हैं और जिसके कारण वे ऊब जाते हैं या स्कूल छोड़ देते हैं, वे मुख्य रूप से भाषा के अन्तर के कारण थीं।

चित्र-शब्दकोशों का विकास

इन परिणामों पर काम करते हुए, विभिन्न भाषा-विशेषज्ञ समूहों के साथ चर्चा की गई कि प्रत्येक समुदाय के बच्चे अपने शुरुआती वर्षों में क्या करना पसन्द करते हैं। फिर उन बच्चों के अनुकूल क्षेत्रों को बच्चों की मातृभाषा-आधारित, स्कूली भाषा की तैयारी पहल के लिए सामान्य थीमों के रूप में संकलित किया गया था। हमने पाया कि बच्चे खेलना, गाना, नृत्य करना, विभिन्न लोगों और दोस्तों के साथ चर्चा करना, खिलौने बनाना, खोजबीन करना, कहानियाँ सुनना/सुनाना, चित्र-कथाएँ पढ़ना पसन्द करते हैं। हमने बच्चों की पसन्दीदा कहानियाँ, गीत, नृत्य, पहेलियाँ, चित्र, खिलौने, खेल, चित्रकला और क्राफ्ट और अन्य अनुभव भी संकलित किए हैं।

2014 में एम-टीएएलएल ने नौ जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाओं में द्विभाषी चित्र शब्दकोश 'मेरी भाषा में मेरी दुनिया' का निर्माण किया, जिनका उपयोग आँगनवाड़ियों में, शिक्षकों या माता-पिता द्वारा बच्चों के छोटे समूहों (अगर बच्चे अलग-अलग भाषा समूहों के हों तो यह अधिक उपयोगी होगा) में

किया जा सके। शिक्षक या माता-पिता और बच्चे इसे साथ मिलकर देख सकते हैं, अपनी भाषा में चित्र के विभिन्न तत्वों पर चर्चा कर सकते हैं और प्रत्येक वस्तु या घटना के बारे में अपने अनुभव साझा कर सकते हैं। इसने प्रत्येक बच्चे और सम्बन्धित शिक्षक या माता-पिता को इस बात में सक्षम किया कि वे एक समृद्ध स्थानीय शिक्षण-संसाधन के रूप में इसका उपयोग कर सकें। यह साधन चित्र, पाठ्य, साथियों, शिक्षक और माता-पिता के साथ बातचीत में सहायता करता है। इसने बच्चे (या बच्चों) की भाषा सीखने के कौशल की एक मज़बूत नींव रखने में मदद की, साथ ही दी गई अवधारणा में उनके ज्ञान, कौशल, प्रवृत्ति और रुचि का संवर्धन हुआ, पहले मातृभाषा में, और फिर समूह में भाषा की विविधता और बातचीत के स्तर तथा दिशा के आधार पर हिन्दी या अन्य भाषाओं में।

इसके बाद उपर्युक्त थीमों में से प्रत्येक के चित्रों का उपयोग विभिन्न भाषा समूहों के बच्चों के छोटे समूह में चर्चा के लिए, सीखने के प्राइमर के रूप में किया जाता है। आँगनवाड़ी सेविकाओं और शिक्षकों ने बच्चों को अपनी भाषा में चित्रों के बारे में अपने स्वयं के अनुभव और विचारों को बताने के लिए प्रोत्साहित किया।

बच्चों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नए शब्दों को सुगमकर्ताओं ने नोट किया ताकि उनका उपयोग बाद में किया जा सके। कमरे के दो कोनों में अलग-अलग भाषा की टोकरियाँ (भाषा-टोकरी, भाषा-भण्डार) रखी गईं ताकि सुगमकर्ता बच्चों द्वारा उपयोग में लाए नए शब्दों और कहानियों को लिख सकें और बाद में कक्षा में उनका उपयोग कर सकें। धीरे-धीरे ऐसे शब्दों और कहानियों का संकलन किया गया। फिर उनकी सहायता से सम्बन्धित सुगमकर्ताओं ने अपने संस्थानों के लिए शब्दकोश, कहानी की पुस्तक, गीत की पुस्तक आदि अधिगम सम्बन्धी संसाधन तैयार किए। बच्चों की मातृभाषाओं में की गई शुरुआती चर्चा ने बच्चों को भाषा सीखने के बुनियादी कौशलों को मज़बूत करने में सक्षम बनाया। धीरे-धीरे इन चर्चाओं को हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित किया गया ताकि बच्चे प्रारम्भिक भाषा-अधिगम के कौशलों का उपयोग बुनियादी हिन्दी सम्प्रेषण सीखने के लिए कर सकें। यह परियोजना पूरे समुदाय में बहुत लोकप्रिय हुई। देश के किसी भी हिस्से के ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों और लोगों के सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आसानी से चर्चा करने के लिए द्विभाषी चित्र शब्दकोशों में बहुत सम्भावना है।

भाषा पुलिया

चूँकि आमतौर पर यह महसूस किया गया था कि बच्चों की पूर्व प्राथमिक शिक्षा उनकी प्रथम भाषाओं में दी जानी चाहिए। इसलिए 2015 में एम-टीएएलएल ने बच्चों की भाषा की तैयारी के लिए *भाषा पुलिया* नामक पैकेज विकसित किया। इसका उद्देश्य झारखण्ड में आँगनवाड़ियों और प्राथमिक विद्यालयों की भाषा/ओं एवं बच्चों की घरेलू भाषा/ओं के बीच पुल बनाना है। इस पैकेज में बच्चों के अनुकूल सीखने की गतिविधियों को एक व्यवस्थित तरीक़े से शामिल किया गया ताकि वे इन शिक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग ले सकें और इसके माध्यम से उन वांछित कौशलों को प्राप्त कर सकें जो पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए आवश्यक हैं।

अधिगम के बारह प्रमुख पड़ावों को बारह गतिविधि गाइडबुक के माध्यम से कवर किया गया, जिसमें सभी गतिविधियों को एक क्रम में रखते हुए अधिगम-सोपान का निर्माण किया : अधिगम के आकलन के प्रारूप, गतिविधि प्रगति चार्ट, आधार-रेखा (बेसलाइन) प्रारूप, *भाषा पुलिया* के लिए एक गाइडबुक, पूरे वर्ष के लिए एक अकादमिक कैलेंडर और स्थानीय शब्दों तथा कहानियों/गीतों को सहेजने के लिए फोल्डर।

इस कार्यक्रम का बच्चों की स्कूल के लिए तैयारी और भाषा सीखने के कौशलों पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा और इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिले कि मातृभाषा-आधारित पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रत्येक बच्चे को सीखने की प्रक्रियाओं का आनन्द लेने, भाषा सीखने के कौशल हासिल करने और स्कूल के लिए तैयार करने में सक्षम बनाती है जिससे वे वर्णमाला, संख्या और फिर विषय सीख सकें। बच्चे यह भी सीखते हैं कि एक टीम के रूप में अधिगम सम्बन्धी गतिविधियों में कैसे भाग लेना है और एक साथ मिलकर कैसे सीखना है।

कार्यक्रमों की सफलता

अब यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि भाषा सीखने के लिए एक बहुविध दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। लेखकों ने समुदाय के भाषा-कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर उनके समुदाय की ऐसी प्रमुख गतिविधियों का पता लगाया जो उनके क्षेत्र में होती हैं, जिनमें बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। उदाहरण के लिए गर्मी के मौसम में विभिन्न त्यौहारों और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना, ग्रीष्मकालीन त्यौहारों को मनाने के लिए विभिन्न बाज़ारों, खेतों, फलों के बागानों और आस-पास के क्षेत्रों में जाने का आनन्द लेना आदि सभी उनके दैनिक जीवन का हिस्सा हैं, जो बच्चों को वर्ष के शुरुआती भाग के लिए निर्धारित अवधारणाओं को सीखने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए पहली कक्षा के बच्चों को अधिगम की ढेर सारी दिलचस्प गतिविधियों में भाग लेने का अवसर दिया जाता है जैसे कि गाने गाना, एक साथ खेलना, कहानियाँ सुनना, अनुभव साझा करना, चित्र बनाना और पढ़ना आदि, ताकि वे स्कूल में सीखने की गतिविधियों में अधिक रुचि लें।

जिस तरह भाषा सम्बन्धी सामग्री का निर्माण करने वाले

लोग सामुदायिक त्यौहारों और व्यवसायों से जुड़े अवसरों, कहानियों, कविताओं, पहेलियों आदि की पहचान करते हैं, वैसे ही गणित सम्बन्धी सामग्री का निर्माण करने वालों ने रंगोली, दीवार के डिज़ाइन, समुदाय में आकृति और आकार से जुड़ी वस्तुओं का इस्तेमाल किया और दिलचस्प अधिगम-गतिविधियों की योजना बनाई जो बच्चों को गणितीय अन्वेषण, सोच और चर्चाओं में संलग्न कर सकती है।

गतिविधि-उन्मुख अधिगम के रास्ते

वर्ष की विभिन्न तिमाहियों के लिए विभिन्न प्रकार की अधिगम गतिविधियाँ तैयार की गईं, जो सभी बच्चों को उत्साहित और संलग्न कर सकें। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय को इस तरह से डिज़ाइन किया गया था कि इसमें विभिन्न प्रकार की अधिगम परियोजनाएँ हों ताकि बच्चे विविधता का आनन्द ले सकें और अधिगम के निर्धारित लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए पर्याप्त रूप से सीख सकें। उदाहरण के लिए भाषा की पुस्तक के लेखकों ने कहानियों, गीतों, पहेलियों, पज़ल्स, प्रहसनों और नाटकों के रूप में सामग्री को डिज़ाइन करके बहुत समृद्ध तरीक़े से भाषा को प्रस्तुत किया, जो बच्चों को इन आनन्दपूर्ण रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न करें और विषय की सुन्दरता और विविधता की खोज करने में उनकी मदद करे। इन सभी में भाग लेते समय बच्चों को यह भी पता चलता है कि पहले से परिचित स्थानीय अनुभवों और घटनाओं का उपयोग करके रचनात्मक सामग्री को कैसे बनाया जाता है।

समुदाय द्वारा समर्थित शैक्षणिक प्रक्रियाएँ

पाठ्यपुस्तक लेखकों ने समुदाय से ही स्रोत व्यक्तियों को लिया जैसे कहानीकार, गायक, नर्तक, संगीतकार, कवि, अभिनेता, पहेली-निर्माता आदि। इन्हें स्कूल के शिक्षकों के साथ मिल कर इन गतिविधियों का संचालन करने का अवसर दिया और इस प्रकार शैक्षणिक प्रक्रियाओं को एक नया आयाम दिया गया। बच्चे, परिचित व्यक्तियों और रिश्तेदारों को शिक्षकों की भूमिका में देखकर चकित रह जाते हैं। समुदाय के, इन हुनरमंद स्रोत व्यक्तियों को कक्षा के लिए निर्धारित अधिगम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में बच्चों का मार्गदर्शन कर पाने के अपने ज्ञान और कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर मिलता है। समुदाय-आधारित यह दृष्टिकोण स्कूल की शैक्षणिक प्रक्रियाओं को काफ़ी समृद्ध करता है।

श्रेणीकृत पठन संसाधन

पहली कक्षा के लिए लगभग बीस, बड़ी कहानियों की पुस्तकों में भाषा और गणित से सम्बन्धित बच्चों के अनुकूल और दिलचस्प कहानियाँ हैं। उन्हें बड़े फ़ॉन्ट में छोटे आलेख के साथ आकर्षक रूप में चित्रित किया गया है। सुगमकर्ता इन पुस्तकों का उपयोग बच्चों को चित्र दिखाने के लिए करते हैं और उन्हें सम्बन्धित पाठ्य जैसे बिल्ली, पेड़, माता आदि से परिचित कराते हैं। पहले साल में बच्चे इनका उपयोग करते हुए धीरे-धीरे अक्षर और संख्या से परिचित हो जाते हैं। दूसरे साल में बच्चों के पढ़ने के अभ्यास को समृद्ध करने के लिए कहानियों की और बीस, छोटी किताबों को डिज़ाइन किया गया जिसमें चित्रण और फ़ॉन्ट छोटे हैं और पाठ्य सामग्री अधिक।

विषय-सामग्री के डिज़ाइनकारों ने इस बात पर ध्यान दिया कि विषय की मुख्य अवधारणाओं से सम्बन्धित गतिविधियाँ आयु-उपयुक्त, दिलचस्प, बच्चों के सन्दर्भ से जुड़ी और प्रासंगिक हों। सन्तुलन भी सुनिश्चित किया गया ताकि कोई अध्याय बच्चों के लिए लम्बा या अधिक पाठ्य वाला न हो; और इसमें शिक्षकों के लिए निर्देश तथा अन्य विवरण भी शामिल हैं। चित्र और उदाहरण ऐसे हैं जो बच्चों के समुदायों में, उनके जीवन और अनुभवों को दर्शाते हैं और बच्चों एवं सुगमकर्ताओं की सोच और आनन्द को उजागर करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

बच्चे कैसे सीख सकते हैं

यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर बच्चा सीखे, यहाँ उन स्कूलों के कुछ प्रमुख लक्षण दिए जा रहे हैं जहाँ मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षा (एमटीबी-एमएलई) कार्यक्रम लागू है : एक जीवन्त भौतिक और शैक्षिक वातावरण, सुविचारित शैक्षणिक योजनाएँ और प्रक्रियाएँ और सामुदायिक संसाधन-समूहों के साथ अधिगम सहयोग। साथ ही इसमें डाइट, बीआरसी, सीआरसी और गैर-सरकारी संगठनों का समर्थन भी शामिल है। स्कूल को गाँव/समुदाय के लिए अनुसन्धान और नवाचार के केन्द्र के रूप में देखा जाता है। यहाँ कुछ प्रमुख विशेषताएँ दी गई हैं :

एक तैयार स्कूल और समाज

पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ हमने अवधारणा नोट्स और प्रशिक्षण मॉड्यूल भी बनाए। दस जनजातीय आबादी वाले ज़िलों में भाषा मानचित्रण के माध्यम से लगभग एक हज़ार स्कूल चुने गए, जिनमें बच्चे केवल सम्बद्ध जनजातीय भाषा में बात करते थे। प्रारम्भ में इन स्कूली क्षेत्रों में माहौल निर्मित करने सम्बन्धी गतिविधियाँ की गईं ताकि शिक्षकों और समुदाय के सदस्यों को नई पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करके मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षा (एमटीबी-एमएलई) कार्यक्रम शुरू करने की सरकार की योजना से परिचित करवाया जा सके। इन स्कूलों के शिक्षकों को नए दृष्टिकोण से जुड़ी सामग्री और शैक्षणिक प्रक्रियाओं से परिचित कराया गया और उसमें प्रशिक्षित किया गया।

पूरे समुदाय को शामिल करना

प्रत्येक स्कूल में समुदाय के संसाधन-समूह का गठन किया गया जिसमें कहानीकारों, गायकों, नर्तकों, संगीतकारों, पहेली-

निर्माताओं, खिलौना-निर्माताओं और हास्य कलाकारों आदि को शामिल किया गया। स्कूलों और समुदाय-संसाधन-समूहों की बैठकों में पाठ्यपुस्तकों को संसाधन व्यक्तियों की भूमिकाओं के साथ जोड़ा गया और इस प्रकार विभिन्न विषयों में शैक्षणिक प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाया गया। फिर, स्कूलों ने एक शैक्षिक कैलेंडर विकसित किया जो यह दर्शाता है कि कौन-सा समूह बच्चों के साथ काम करने के लिए आवश्यक तैयारी के साथ किसी स्कूल विशेष का दौरा करेगा और उन्हें वांछित ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में सक्षम करेगा।

सरकार की भागीदारी

झारखण्ड सरकार अब राज्य के दस ज़िलों के लगभग एक हज़ार स्कूलों में इन सामग्रियों और प्रशिक्षण का उपयोग करके एक मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षा (एमटीबी-एमएलई) कार्यक्रम चलाती है जिसके लिए लेखक के मार्गदर्शन में प्राथमिक स्तर के लिए सात जनजातीय और क्षेत्रीय भाषाओं में नई पाठ्यपुस्तकों का विकास किया गया। भाषा और गणित की पाठ्यपुस्तकों ने बच्चों, शिक्षकों और समुदाय के सम्बन्धित सदस्यों में बहुत उत्साह और रुचि पैदा की है। इस समुदाय-आधारित दृष्टिकोण ने इन स्कूलों का कायापलट कर दिया है जहाँ अब सक्रिय विद्यार्थी, उत्साही शिक्षक और गतिशील समुदाय समर्थित गतिविधियाँ नज़र आने लगी हैं।

निष्कर्ष

एमटीबी-एमएलई कार्यक्रम ने स्कूलों को बदल दिया है और सम्बन्धित जनजातीय समुदायों में ज़बरदस्त उत्साह पैदा कर दिया है। शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के नामांकन और उपस्थिति में बहुत महत्त्वपूर्ण सुधार हुआ है और इन स्कूलों की ड्रॉपआउट दरों में भी कमी आई है। जो कक्षाएँ कभी शान्त रहा करती थीं, उनमें अब नए सिरे से ऊर्जा, उत्साह, समुदाय का समर्थन और सीखने की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी देखने को मिल रही है। समुदाय के सदस्यों के सक्रिय सहयोग से तैयार की गई लोक-साहित्य पर आधारित सामग्री ने कक्षा की प्रक्रियाओं में एक नए जीवन का संचार किया है और अन्ततः सामाजिक परिवर्तन किए हैं। इन पुस्तकों को, किसी भी प्रासंगिक इलाके के सन्दर्भ से जुड़ी जानकारी के आधार पर किसी भी राष्ट्रीय भाषा के अनुकूल बनाया जा सकता है।



बिनय पटनायक झारखण्ड में एम-टीएएलएल अखरा के संस्थापक हैं। वर्तमान में वे विश्व बैंक समर्थित परियोजना, 'बिहार में शिक्षक प्रभाव का संवर्धन', के लिए कार्यान्वयन सहायता एजेंसी (आईएसए) के टीम लीडर के रूप में कार्य कर रहे हैं। वे विश्व बैंक, भारत के वरिष्ठ शिक्षा सलाहकार हैं। इससे पहले उन्होंने यूनिसेफ, भारत के साथ शिक्षा विशेषज्ञ के रूप में 8 साल से अधिक समय तक नई दिल्ली और झारखण्ड के कार्यालयों में कार्य किया। वे एक दशक तक राष्ट्रीय तकनीकी सहायता समूह (टीएसजी) की ओर से एमएचआरडी, भारत सरकार के मुख्य सलाहकार (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) रहे हैं। उन्होंने विज्ञान और शिक्षा विषयों पर बच्चों और शिक्षकों के लिए 180 से अधिक पुस्तकों का लेखन और अनुवाद किया है। उन्होंने कई राज्यों के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को बनाने में भी योगदान दिया है। वे कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित हैं। उनसे binaypattanayak@outlook.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

हम अभी भी अपने शिक्षकों से यही अपेक्षा करते हैं कि वे सभी बच्चों को एक ही समय में एक ही विधि से एक ही बात सिखाएँ और एक ही परिणाम प्राप्त करें। यह एक ऐसा विचार है जो 'विफल होने के लिए डिज़ाइन' किया गया है क्योंकि यह इस बात को सुनिश्चित करता है कि अधिकांश बच्चे, जो अन्यथा तीव्रबुद्धि और सक्षम हैं, वे किसी न किसी कारण से अधिगम की प्रक्रिया से बाहर रह जाएँ।

- सुबीर शुक्ला, 'हमें अनुक्रियाशील स्कूलों की आवश्यकता क्यों है !' पेज 95